National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023; 1(48): 204-206
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

ऋग्वेद में कृषि प्रणाली: एक समग्र अध्ययन

डॉ सुरेश कुमार

ऋग्वेद, जिसे मानव सभ्यता का प्राचीनतम लिखित दस्तावेज माना जाता है, केवल एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं है बल्कि वैदिक काल की सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी स्थितियों का एक दर्पण भी है। इसमें कृषि, जो उस युग की आर्थिक रीढ़ थी, का सुन्दर और बहुआयामी चित्रण मिलता है। ऋग्वेद में कृषि केवल जीविकोपार्जन का साधन न होकर एक पवित्र कर्म, प्रकृति के साथ सहयोग और देवताओं की कृपा प्राप्त करने का माध्यम थी।

ऋग्वेद में कृषि का दार्शनिक एवं सांस्कृतिक उल्लेख

वैदिक ऋषियों की दृष्टि में कृषि एक दैवीय प्रक्रिया थी। भूमि के उर्वरकत्व और फसलों के उत्पादन के लिए वे प्रकृति की शक्तियों (देवताओं) को ही मूल कारण मानते थे।

1. कृषि: एक यज्ञ के रूप में: वैदिक मान्यता थी कि जिस प्रकार यज्ञ में आहुति दी जाती है, उसी प्रकार किसान भूमि में बीज की "आहुति" देता है, जिसका फल रूपी "प्रसाद" वह बाद में प्राप्त करता है। यह पूरी प्रक्रिया ईश्वर और प्रकृति के सहयोग से पूर्ण होती थी।
2. पृथ्वी माता का भाव: ऋग्वेद में पृथ्वी को 'माता' (माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः) की संज्ञा दी गई है। इस भावना के मूल में कृषि का ही योगदान था। जो भूमि अन्न देती है, वह माता के समान पोषण करती है।
3. ऋत का सिद्धांत: वैदिक ऋषि 'ऋत' को मानते थे, जो प्रकृति का नियमबद्ध और संतुलित क्रम है। कृषि कार्य, जैसे बुआई, सिंचाई और कटाई, इसी 'ऋत' के अनुसार, अर्थात ऋतुओं के चक्र के अनुसार संपन्न होते थे। समय पर वर्षा होना और फसलों का पकना 'ऋत' की स्थिति को दर्शाता था

ऋग्वेद में वर्णित कृषि के प्रमुख उपकरण

ऋग्वेद में कृषि के लिए प्रयुक्त होने वाले उपकरणों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है, जो उस समय की तकनीकी विकसित अवस्था को दर्शाता है। हल (लांगल/सीर): हल कृषि का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण था। इसे 'सीर' या 'लांगल' कहा जाता था।

"यदंगुल्या न विशाखे समञ्जन् सीरा युजा न मिमतो रथानाम्।
परि स्वधाभिर्दुरो अप्रपित्व आ वां विशन्तु सुमनस्यमानाः॥[1]"

इस मंत्र में 'सीरा' (हलों) और 'युजा' (बैलों का जोड़ा) का उल्लेख है, जो भूमि जोतने का कार्य करते हैं। इससे स्पष्ट है कि हल को बैलों के जोड़े द्वारा खींचा जाता था।

"समित्सीरा वि कृषन्तु भूमिं समित्केतवः पिपृतां नः
शुनं सीरा वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः।[2]"

यह मंत्र स्पष्ट रूप से कहता है - "हल भूमि को अच्छी तरह जोतें, किसान सुखपूर्वक अपने वाहनों (बैलों) के साथ आगे बढ़ें।" 'कीनाशा' शब्द किसान के लिए प्रयुक्त हुआ है।

2. फाल (हल का नोक): हल का नोक वाला लोहे का भाग, जो भूमि को काटता था।

शुनं फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः।

शुनं वरत्रा दधतां शुनं क्षेत्रस्य नः पतिः।[3]"

"फाल भूमि को कुशलतापूर्वक जोतें।" फाल का स्पष्ट उल्लेख इस बात का प्रमाण है कि हल एक परिष्कृत उपकरण था।

3. हल की नाभि (अक्ष): वह धुरी जिसमें हल जुड़ा होता था।

"ऋतेन सीरा वि कृषन्त्यापः सीरा यत्र नभन्यासु बद्धाः।[4]"

"सत्य (ऋत) के साथ हल जल (वर्षा) को खींचते हैं, वे हल जहाँ नाभि (अक्ष) में बंधे हैं।" यहाँ 'नभन्या' (नाभि) का उल्लेख है।

4.दात्र (दरांती/कटाई का उपकरण): फसल काटने के लिए प्रयुक्त होने वाला उपकरण।

"युवं क्षेत्रमपिबज्जयथो अर्वाग्युवं दात्रं वि ष्यथो रजांसि।[5]"

इस मंत्र में 'दात्र' (दरांती) का उल्लेख है, जिससे फसल काटने का कार्य किया जाता था।

5.परशु (कुल्हाड़ी): जंगल साफ करके भूमि उपजाऊ बनाने के काम में आने वाला उपकरण।

कृषि प्रक्रिया का विवरण

ऋग्वेद में कृषि की संपूर्ण प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का वर्णन बिखरे हुए रूप में मिलता है।

भूमि का चयन एवं तैयारी: सर्वप्रथम उपजाऊ भूमि का चयन किया जाता था। जंगलों को काटकर और जलाकर भूमि को कृषि योग्य बनाया जाता था। इसके बाद हल से भूमि जोती जाती थी।

इन मंत्रों में कृषि देवता कृषि-शिल्प का वर्णन है, जिसमें भूमि को तैयार करने का उल्लेख मिलता है।

2. बीजारोपण (बुआई): जुती हुई भूमि में बीज बोए जाते थे। बीजों को 'बीज' या 'वीरुध' कहा जाता था।

"समित्सीरा वि कृषन्तु भूमिं समित्केतवः पिपृतां नः।[6]"

"हल मिलकर भूमि को जोतें और हमारे लिए बीजों से (भूमि को) भर दें।" यहाँ बीजारोपण का संकेत है।

3. सिंचाई : वर्षा सिंचाई का प्रमुख स्रोत थी। ऋग्वेद में इंद्र को वर्षा का देवता मानकर उनकी स्तुति की गई है। नहरों या जलाशयों द्वारा सिंचाई का भी प्रमाण मिलता है।

"अपो यद्वः सिकता न विद्युर्न दुरो अश्नन् परि यद्वभूव।[7]"

इस मंत्र में जल (अपः) का उल्लेख कृषि के संदर्भ में है।

4. फसल की कटाई एवं गहाई: फसल पकने के बाद दात्र (दरांती) से उसे काटा जाता था। इसके बाद अनाज को डंठल से अलग करने (गहाई) के लिए बैलों को खलिहान में दौड़ाया जाता था।

युवं क्षेत्रमपिबज्जयथो अर्वाग्युवं दात्रं वि ष्यथो रजांसि।[8]

हे अश्विनी कुमारों! तुमने (रोग रूपी) शत्रु को जीत लिया, जैसे कोई किसान दात्र (दरांती) से अन्न के ढेर (रजांसि) को अलग कर देता है।"

5. अनाज का भंडारण : कटाई और गहाई के बाद अनाज को कोठारों या भंडार गृहों में सुरक्षित रखा जाता था। इन्हें 'उत्स' या 'कोष्ठ' कहते थे।

" पूर्णमुत्सं दधथुर्यत्र गोनां पूर्णमिन्द्रः सोमपा यत्र सोमः।[9]"

"जहाँ गायों और अन्न से भरा हुआ भंडार गृह है...

प्रमुख कृषि उपजें

ऋग्वेद में अनेक प्रकार के अन्नों और फलों का उल्लेख मिलता है।

1. यव (जौ): ऋग्वेद में सबसे अधिक बार उल्लिखित अन्न यव (जौ) है। यह उस युग की प्रमुख फसल थी।

यवं नो यवसप्रियवपुष्टमं पुरुस्पृहम्।

इन्द्रं स्तोमैरवीवृधन्॥[10]

हे इन्द्रके समान प्रिय (जौ) हम यव !, उत्तम पोषण देने वाले और अनेकों की इच्छा को पूर्ण करने वाले आपका स्तुति गानों द्वारा वर्धन करते हैं।"

आदि अनेक स्थानों पर यव का उल्लेख है।

2. धान्य (सामान्य अन्न) : धान्य शब्द सामान्य रूप से अन्न के लिए प्रयुक्त होता था।

सं वां मित्रावरुणावृधस्पयः समु द्यावापृथिवी धान्यं दुहाताम्।

सं सूर्यश्चक्षसा सं स्वराडिड्यते बृहस्पतिर्वसुभिर्नो व्यन्तु॥[11]

हे मित्र और वरुणतुम ! दोनों हमारे लिए वृद्धि और पोषण हमारे लिए धान्य !से एकत्रित हों। हे आकाश और पृथ्वी (ऋधस्पयः) की धारा एकत्रित करो। सूर्य अपने तेज से (अन्न), स्वराट् अपने (इन्द्र) प्रकाश से और बृहस्पति अपने धनों से हमारी रक्षा करें।

3. तिल : तिल का उल्लेख भी मिलता है, जिसका प्रयोग तेल और यज्ञ में आहुति के लिए किया जाता था।

4. फल एवं सब्जियाँ: अनेक प्रकार के फलों जैसे अंजीर (उदुम्बर), खजूर (फेनस) आदि का भी उल्लेख है। कृषि से जुड़े देवता एवं मंत्र वैदिक कृषि प्रणाली देवताओं के सहयोग पर आधारित थी। विभिन्न देवताओं से अलग-अलग कृषि कार्यों के लिए प्रार्थना की जाती थी।

1. इंद्र : वर्षा के देवता के रूप में इंद्र का स्थान सर्वोपरि था। उनसे समय पर वर्षा की प्रार्थना की जाती थी।

"यः पर्थिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रति मुमोद अन्तः।...स जनास इन्द्रः।[12]"

इंद्र की स्तुति में कहा गया है कि जिन्होंने पृथ्वी को स्थिर किया और पर्वतों को स्थापित किया, वे इंद्र ही हैं (जो कृषि के आधार हैं)।

2. पर्जन्य : वर्षा के बादलों के देवता। इन्हें विशेष रूप से वर्षा के लिए पुकारा जाता था।

" आ पर्जन्य धारया कनिक्रदद्वि गावः स्यन्दन्तामश्मन् पयः ।

आविस्कन्वो न स्वपा यथासन्नपामुपस्थे मधुमत् पिन्वध्वम् ॥[13]"

"हे पर्जन्य! जोर से गरजते हुए जल की धाराओं से वर्षा करो। गायें (बादल) दुग्ध (जल) की धारा बहाएँ।"

3. सीता : सीता का उल्लेख हलरेखा या कृषि की देवी के रूप में मिलता है। यहाँ सीता लक्ष्मी नहीं, बल्कि कृषि कर्म की देवी हैं।

" सीते वन्दामहे त्वार्ये धान्यानां धरणि प्रिये।

शुनं नो भवसि द्वये प्रजानां च मधुवद्यते।। [14]"

"हे सीता देवी! हम तुम्हारी वंदना करते हैं।"

4. अश्विनी कुमार: वे रोग नाशक और कल्याणकारी देवता थे, जिनसे पशुओं और फसलों के स्वस्थ रहने की प्रार्थना की जाती थी।

पशुधन का महत्व

कृषि और पशुपालन वैदिक अर्थव्यवस्था के दो पूरक आधार थे। बैल हल खींचने के लिए और गाय दुग्ध के लिए पाली जाती थीं। गाय को 'अहन्या' (न मारने योग्य) कहा गया है, जो उसके महत्व को दर्शाता है। खाद के रूप में भी गोबर का प्रयोग होता था।

निष्कर्ष

ऋग्वेद में वर्णित कृषि प्रणाली एक सुसंगठित, दैवीय भावना से युक्त और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण प्रणाली थी। यह केवल भोजन उत्पादन तक सीमित नहीं थी, बल्कि उनके सामाजिक जीवन, आर्थिक समृद्धि और दार्शनिक चिंतन का केंद्र बिंदु थी। हल, बैल, सिंचाई और भंडारण जैसी अवधारणाओं का विस्तृत वर्णन सिद्ध करता है कि वैदिक सभ्यता एक विकसित कृषि-प्रधान सभ्यता थी। ऋग्वेद में कृषि का चित्रण हमें यह सीख देता है कि मानव का प्रकृति के साथ संबंध शोषण का नहीं, बल्कि सहयोग और कृतज्ञता का होना चाहिए। यह दृष्टिकोण आज के युग में भी, जब कृषि औद्योगीकरण और रसायनों के बोझ तले दबती जा रही है, अत्यंत प्रासंगिक और मार्गदर्शक है।

संदर्भ -

1. ऋग्वेद 4.57.4
2. ऋग्वेद 4.57.6
3. ऋग्वेद 4.57.6-7
4. ऋग्वेद 4.57.7
5. ऋग्वेद 4.57.8
6. ऋग्वेद, मंडल 1, सूक्त 117, ऋचा 21
7. ऋग्वेद 2.14.11
8. ऋग्वेद, मंडल 1, सूक्त 16, ऋचा 1
9. ऋग्वेद 4.57.6
10. ऋग्वेद 2.12.3, 5.83.6
11. ऋग्वेद 7.101.1-6
12. ऋग्वेद 4.57.6
13. ऋग्वेद 7.101.1
14. अथर्ववेद 2.17.9